

8. महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त का विस्तार से वर्णन कीजिए तथा उस सिद्धान्त के चर्च तथा विपक्ष का भूस्थानन कीजिए।

अल्फ्रेड वेगनर एक जर्मन जलवायु शास्त्री थे, उन्होंने अपने जलवायु सम्बन्धी कोष के दौरान पाया कि विश्व के अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग भौगोलिक विशेषता पायी जाती है जो उस स्थान के वर्तमान भौगोलिक अवस्थिति के अनुकूलन से मेल नहीं खाता है, जैसे - अन्तर्कटिक क्षेत्र में कोयला का पाया जाना प्रमानित करता है कि यह क्षेत्र कभी पूर्व में कभी-कभी उष्ण क्षेत्र में रहा होगा। उसी प्रकार आरतीय प्रायद्वीप एवं अफ्रिका के भागों में हिमवत के पाए जाने जैसे गोसावस आदि का पाया जाना सिद्ध करता है कि यह क्षेत्र पूर्व में एकीकृत क्षेत्र के आस-पास रहा होगा। इसी परिपेक्ष्य में वेगनर महोदय ने 1912 में महाद्वीपीय विस्थापन का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

उन्होंने स्वतीय भागों में मौजूद भिन्नताओं को देखते हुये दो -

सम्भावनाओं को निर्दिष्ट किया -

(1) यदि स्थल भाग स्थिर रहा है तो  
जलवायु कटिबंध में स्थानान्तरण हुआ है

(ii) अगर जलवायु कटिबंध स्थिर रहा  
है तो स्थलीय भागों का स्थानान्तरण  
हुआ है।

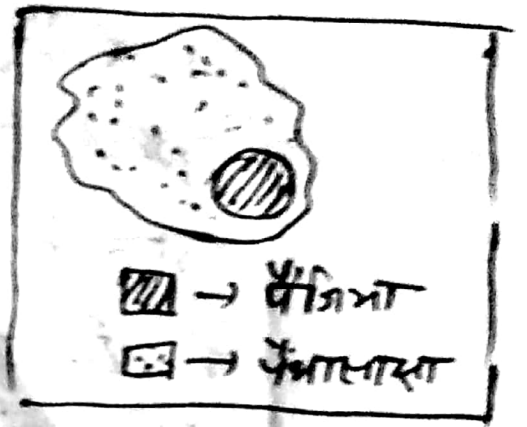
उन्होंने जलवायु कटिबंध के  
स्थानान्तरण का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं  
पाया। अतः स्थलीय भाग के स्थानान्तरण  
की ही उन्होंने स्वीकार किया।

वेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन के सिद्धांत  
को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित  
भावनाओं को विश्लेषण का आधार  
बनाया।

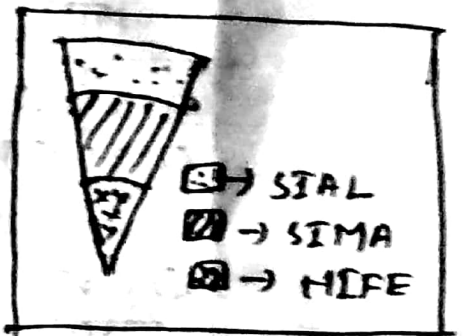
\*) महाद्वीपीय कूट की उत्पत्ति के  
समय एक बड़े महाद्वीप पैंगिया का  
निर्माण हुआ था। जो अपने चारों तरफ  
एक विशाल जलीय क्षेत्र से घिरा हुआ  
था जिसे पैन्थालासा कहा गया। साथ  
में पैंगिया की अक्षांश रेखा 60° उत्तर के  
पास था।



\* कार्बोनिफेरस युग में पहले तक खनी महाद्वीप वैजिआ के रूप में एकजुट थे। सिन्नाल से निर्मित यह महाद्वीपीय कूट SIMA के ऊपर तैर रहा था क्योंकि SIAL का घनत्व खीना था कम है।



\* कार्बोनिफेरस युग के बाद वैजिआ दो भागों में विखंडित हो गया तथा बीच के भागों में पैंगालासा का जल प्रवेश कर गया।



इन दो विखंडित हिस्सों को क्रमशः अंगारालैंड एवं गोंडवाना लैंड कहा गया तथा उनके बीच के जलोच्च हिस्से को टेन्जिस सागर कहा गया।

पुनः कालांतर में 225 मिलियन वर्ष पूर्व दार्शनिक कल्प में अंगारालैंड एवं गोंडवाना लैंड में भी विखण्डन हो गया। अंगारालैंड से उत्तरी अमेरिका, अंगोलैंड, एशिया एवं यूरोप का निर्माण हुआ वहीं गोंडवाना लैंड के विखण्डन से द. अमेरिका, अफ्रीका, अस्ट्रेलिया, मंडलाकर, एवं प्रमद्वीपीय भारत का निर्माण हुआ।

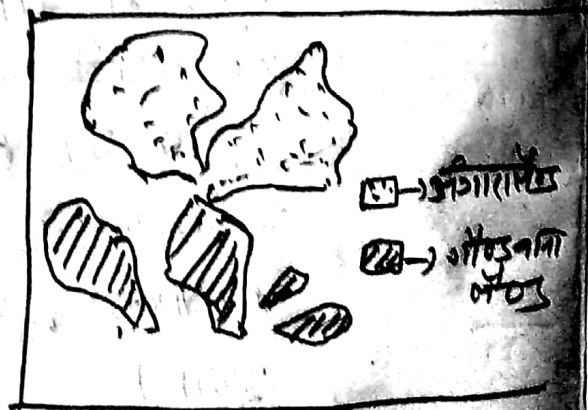
अधुना विश्वविदित भाग प्रकृति के गुणवत्ता का लक्षणशीलता का एक उदाहरण का प्रकाश में उत्तर एक पश्चिम भागों में फैलाए जाने लगा, जिसे विभिन्न नवीन संरचना का जन्म हुआ।

खाली भाग:	पंचरण की दिशा	प्रकृति का	नवीन संरचना का निर्माण
दक्षिण अमेरिका दक्षिण अमेरिका	पश्चिम	चन्द्रमा का उत्तरीय का	रॉकी, एंडिज अटलांटिक महासागर
एशिया यूरोप प्रायद्वीपीय भारत आफ्रिका अस्ट्रेलिया	उत्तर	1) गुणवत्ता का 2) लक्षणशीलता का	अल्प्स, हिमालय हिन्द महासागर

सिलेक्टोसोन युग तक आते-आते महाद्वीपों में वर्तमान स्थिति से मिलता जुलता स्वरूप धारण कर लिया।

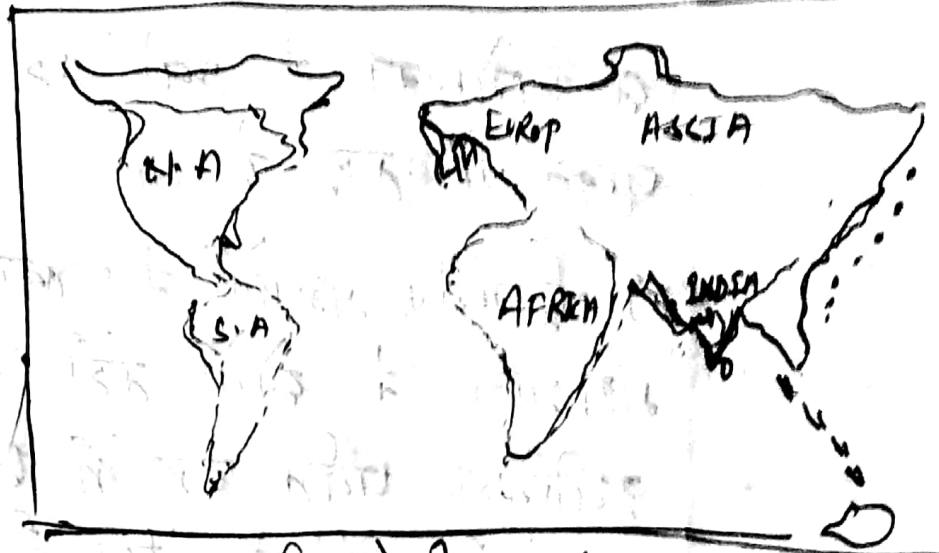


परमिजन कल्प



ट्राशिक कल्प





प्लेटोथीय कल्प के बाद वर्तमान स्थिति

महाद्वीपों के विखण्डन के बाद विभिन्न दिशाओं में इसके खानानाश के कारण पृथालासा का संकुचन हुआ। वर्तमान में पृथालासा के एक अकशिशर भाग को प्रशांत महासागल नाम दिया गया।

महाद्वीप विलक्षण के पक्ष में प्रमाणः

भूगर्भिक संरचना, जलवायु तथा वनस्पतिधों के वितरण के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित किया कि सभी खण्ड भाग पहले एकलखण्ड थे और विखण्डन के बाद इनका विलक्षण हुआ है -

1) भूगर्भिक संरचना का आधार:-

अ) अक्षर्यांतिक महासागल के दोनों तटों पर भौगर्भिक समानता पायी जाती है। ख) दोनों तटों का आपस में मिलाना सा संभव है। उ) उदाहरण- अमेरिका के पूर्वी तट का यूरोप के पश्चिम तट से तथा

दो अमेरिका के पूर्वी तट को अफ्रिका से  
पश्चिमी तट से ।

क) भूगर्भीय प्रमाणों के आधार पर अटलांटिक  
महासागर के दोनों तटों के क्रेटेशियस काल  
इथियोपिया पर्वत श्रृंखला से उभरना पायी जाती है,  
दोनों पर्वतों के शैल संरचना की विशेषता  
एक जैसी है।

## 2. पक्षियों के विलोपन का आधार

अ) अटलांटिक महासागर के दोनों तटों में पक्षियों  
के विलोपन में पाये जाने वाले जीवा-अवशेष  
में समानता पायी जाती है।

ब) उत्तरी अमेरिकी पक्षियों का विलोपन, अफ्रिका  
कोकॉस, आस्ट्रेलिया एवं अटलांटिक में  
पाया जाता इसके अलावा लिटोरॉस नामक  
अण्ड का विलोपन कोकॉस के समीप भू-भागों  
में पाया जाता पक्षियों की अवधारणा को  
बतल देता है।

ग) लेनिंग नामक पक्षी जीव का Scandinavian  
के 3 देशों में पाया जाता और इसके पश्चिम  
की ओर जाने की प्रकृति आज भी विद्यमान  
है। इसके प्रमाणित होता है कि अब पूर्व में पक्षियों  
भाग थलजल से तब से जीव परिचय की  
ओर विचार करनी थी।



### 3. जलवायवीय दरारों का आकार

दो अफ्रीका, प्रायद्वीपीय भारत, अल्फ्रेडिया प्रायद्वीप में हिमानी का घाबरा मिट्टा विद्ध करता है। अ-कार्बोनिफेरस युग में प्रे वनी स्वतः खण्ड आपस में जुड़े होंगे और स्वकी अवस्थिति दो युग में पास ~~इस~~ रहा होगा।

### 4. साम्प्रवत्ता प्रमाण (JIL SAW FIT)

इसके अलावा महाद्वीपों को एक साथ खोजा जाये तो यह पूरी तरह जुड़ जाता है। जैसे - प्रायद्वीप के अलावा को गिनी की खाड़ी के तथा उब अमेरिका के पूर्वी भाग को यूरोप के पठ भाग में मिलाया जा सकता है।

### 5. पुरा-चुम्बकीयता

प्राचीन रॉलें की चुम्बकीयता ज्ञान इसके अलावा अल लमन की अक्षांशीय स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है जब इन रॉलें को निर्माण हुआ था और जिस लमन अपने अपने अक्षांशों के अनुक्रम इन्होंने चुम्बकीय युग ग्रहण किया था जो आज भी इन रॉलें में दृश्य पड़ा है।

वैंगनर के सिद्धांत के विपक्ष में तर्क:

1) वैजिमा का विखण्डन दिन करणों से हुआ उन्होंने ने स्पष्ट नहीं कर पाया।

(2) कोर्कोनिकेरस भुगर्भ पहले वैशिया किन  
वर्षों में आज आपस में जुड़े थे क्योंकि  
नहीं बनाया

3) उत्तरी अक्षांश महाद्वीपों का विस्थापन  
तो उत्तरी की तरफ था तो परिपक्व की तरफ  
हुआ है लेकिन आज एव अल्फ्रेडिया का  
विस्थापन उत्तर-पूर्व दिशा में हुई जो अर्ध  
मान्यताओं से अलग है।

4) उत्तरी महाद्वीपों के प्रवाह में ज्वारीय  
बल एवं गुरुत्वीय बल की भूमिका  
बनाया। लेकिन चरमका के ज्वारीय बल  
से महाद्वीपों का प्रवाह परिपक्व की तरफ तथा  
होगा जब इसकी क्षमता वर्तमान से 1000  
करोड़ गुणा ज्यादा थी। लाख ही गुरुत्वीय  
बल से कई बलु स्थिर एवं आपस में  
जुड़े रहेंगे। अलग होना उनकी मान्यताओं  
के विपरित है।

5) उत्तरी कल्पि, पर्वत, द्वीप, महासागरीय  
करक की वरि उत्पत्ति के बारे में  
कुछ नहीं कहा।